दीक्षा महोत्सव
की
योजना तथा व्यवस्था

"अनंत हित का आरोपण"

Scanned with CamScanner

इस दीक्षा महोत्सव का अभीष्ट स्वरूप :

- उपयोग में आने वाली प्रत्येक साधन- सामग्री शुद्ध हो।
- उपयोग में ली जाने वाली प्रत्येक वस्तु भारतीय पद्धति से, और उसके परंपरागत कारिगर द्वारा बनाई गई हो।
- दीक्षा महोत्सव के प्रत्येक अंग में, शुभ संकल्प और गंभीर प्रयत्न से, कम से कम आधुनिक यंत्रो का उपयोग हो। आधुनिक यंत्रो का उपयोग प्रासंगिक स्तर पर भी न या कम से कम हो, और उपयोग में ली जाने वाली वस्तुओं, साधन- सामग्री की बनावट में भी न या कम से कम हो।
- इस दीक्षा महोत्सव का संपूर्ण वातावरण, शुभ भाव के आलंबन से, विधि, वस्तुओं व प्रक्रियाओं में शुद्धता और शास्त्र-प्रमाण के आग्रह द्वारा, शुद्ध भारतीय, सांस्कृतिक और आध्यात्मिक हो।
- यह दीक्षा महोत्सव, शास्त्रोक्त, शुद्ध भारतीय संस्कृति का एक प्रतीक और बीज हो। धर्म युक्त और एक आध्यात्म केन्द्रित जीवन व्यवस्था को संभव बनाने का आधार भारतीय, ऋषि- मुनि स्थापित, संस्कृति है।

मोक्ष लक्षी सभी दर्शनो के साधकों के लिए, आधुनिक या सांस्कृतिक मति वाले आध्यात्मिक रुचि रखते व्यक्तियों के लिए, या धर्म में न मानने वाले भी सज्जन, शांति-प्रिय व्यक्तियों के लिए, यह संस्कृति और जीवन व्यवस्था माता तुल्य है और सद्-पुरुषार्थ की आधार शीला है। हज़ारों वर्षों से एक जीवंत स्वरुप में सक्रीय रहने के कारण, यह संस्कृति एक अदृश्य घटक बन कर रही है। परंतु आज के काल में, अनेक प्रकार के आधुनिक प्रभाव और आक्रमण तले नष्ट होती चली, भारतीयों की मति से विस्मृत होती चली, और नई पीढ़ी के अनुभव में आई ही नही हुई, इस संस्कृति को उसके पृष्ठभूमि के स्थान से निकाल कर अग्रभूमि स्थान पर, इस दीक्षा महोत्सव द्वारा ले आना हैं। इस महोत्सव की सर्व व्यवस्थाओं और योजनाओं में संस्कृति और संभव उतने सांस्कृति पदार्थ को आधार रख कर आदर प्रदान करना है जिस से न केवल यह प्रसंग शुद्ध बने, परंतु इस मौन और विनीत संस्कृति-माता की उपकारिता, एक मनुष्य के अंतर विकास के लिए, गृहस्थ हो या साधु, और उसकी पूर्वभूमिका-रुपी जीवन व्यवस्था का बोध हो।

Scanned with CamScanner

दीक्षा महोत्सव में योजना तथा व्यवस्था में शुद्ध, सांस्कृतिक पदार्थ और पद्धति को आधार रखने का कारण :

"जयणा पालन"

हमारे चारो ओर विशाल जीवसृष्टि फैली हुई है। गली में कुत्ते है, आंगन में बिल्ली है, रसोई में तिलचटा है, शयनखंड में खटमल है, नाली में चूहे हैं, सिर पर जू है, कोने कोने में चींटी के दर है, छत या दीवार में कहीं पक्षी के घोसले हैं और मकड़ियों के जाले हैं, फर्निचर या दीवार में दीमक है, चारों ओर मच्छर उड़ते हैं, नल में से बहते असंख्य सूक्ष्म जीव हैं, अनाज में कीड़े हैं, सब्जी-तरकारी में कीड़े हैं। बर्तन और किताबों में भी अनेक सूक्ष्म जीव-जंतु दिखते हैं। दीवारों पर छिपकलि है। पंच-महाभूतों सभी में अकल्पनीय प्रमाणों में सूक्ष्म और छोटे-बड़े जीव हैं।

मनुष्यों के गाँव, नगर, शहर, घर, रस्ते, कारखाने और कोई भी संस्थाओं में यह जीवसृष्टि व्याप्त है।

वास्तविकता यह है कि मनुष्य जीवन चलाने, कुछ मात्रा में जीवों को मारने से छुटकारा नही है। इस ही लिए, मारना पड़े उतनी ही अल्प मात्रा में हमारे हाथ

जीवों की मृत्यु हो, उस प्रकार के भाव और जागरुति-पूर्वक ध्यान रखने को "जयणा" कहते हैं।

जैन दर्शन में "जयणा" को गृहस्थ की माता कहा है। गृहस्थ जीवन में संपूर्ण अहिंसा संभव नहीं है परंतु एक जयणा-युक्त, कोमल भाव और विवेक युक्त जीवन संभव है।

आचारांग सूत्र (आगम ग्रंथ) में भगवान महावीर कहते हैं - "सव्वेसिं जीवियं पियं, नाइवाएज्ज कंचणं"
अर्थ - सभी जीवों को अपने प्राण प्रिय हैं, कोइ जीव मृत्यु की इच्छा नही रखता।
"आयओ बहिया पास" - अर्थ - दूसरों में अपने आप को देखो।

जैनों की जो प्रतिदिन की धर्मक्रियाओं में, जिसका दिन में वे दस बार उच्चारण करते होंगे और जैनों के छोटे बच्चें जिसे बेधड़क बोल कर बता सकते है, वैसा एक "इरियावहियं" सूत्र है।

इरियावहियं सूत्र में आता है:

"इच्छाकारेण संदिसह भगवं
इरियावहियं पड़िक्कमामि?
इच्छं। इच्छामि पडिक्कमिउं।
इरियावहियाए विराहणाए।
गमणागमणे।
पाण-क्कमणे, बीय-क्कमणे, हरिय-क्कमणे, ओसा-उत्तिंग-
पणग- दगमट्टी - मक्कडा - संताणा - संकमणे।
जे मे जीवा विराहिया।
एगिंदिया, बेइंदिया, तेइंदिया, चउरिंदिया, पंचिंदिया।
अभिहया, वत्तिया, लेसिया, संघाइया, संघट्टिया,
परियाविया, किलामिया, उद्दविया, ठाणाओ ठाणं, संकामिया,
जीवियाओ ववरोविया, तस्स मिच्छामि दुक्कड़म।"

<u>अर्थ</u> : "चलते समय मैंने जीवित प्राणियों को दर्द दिया होगा या कुचल दिया होगा, जैसे- चेतनवंत बीज़, पौधे, ओस मे जीवित प्राणी, जीवित चींटी पहाड़ियाँ, जीवित कोई पानी में रहने वाले प्राणी, पृथ्वी में रहने वाले प्राणी, मकड़ियों के जीवित जाले - हो सकता है कि मैंने इन सभी को परेशान किया हो या कुचल दिया हो।

मेरे कारण जो भी जीवित प्राणी हैं, उन्हें दर्द हो सकता है:

Scanned with CamScanner

पृथ्वी, जल, अग्नि, वायु और पौधों के तत्त्व के रूप में, केवल एक इंद्रिय, स्पर्श की भावना के साथ जीवित प्राणी;
केवल दो इंद्रिय वाले जीवित प्राणी - स्पर्श और स्वाद की भावना वाले, जैसे कि कीड़े और खोल प्राणीयों में;
तीन इंद्रियों वाले जीवित प्राणी - स्पर्श, स्वाद और गंध की भावना वाले, जैसे ~~चींक~~ चींटियों में;
चार इंद्रियों वाले जीवित प्राणी - स्पर्श, स्वाद, गंध और दृष्टि की भावना वाले, जैसे कि मधुमक्खियों, ततैया और अन्य उड़ने वाले कीड़ों में;
सभी पाँचों इंद्रियों वाले जीवित प्राणी - स्पर्श, स्वाद, गंध, दृष्टि और श्रवण की भावना वाले, जैसे कि मछली, पक्षी, जानवर और मानव;
जो कोई यात्रा करते समय मेरे द्वारा मारा गया हो,
मेरे से जो कई जीव धूल से ढक गया हो, भूमि से घिस कर कुचला गया हो, अंदर-अंदर जिनके शरीरों को खींच कर भीड़-भाड़ में साथ डाला गया हो, जिनकी मर्जी / अनुमति बिना स्पर्श कर के दुखी किया हो, डराया हो, जिन्हें पूरी तरह उलटा करके पीड़ा दी हो, जिसे मैंने एक स्थान से दूसरे स्थान पर स्थानांतरित किया हो, जिन्हें मैंने जीवन से अलग कर बेजान बना दिया हो।
वह सब क्षमा हो जाए और जाने-अनजाने मेरे द्वारा किए गए सभी कष्टों का अंत हो जाए। मुझमें जो अज्ञान है, जिससे अन्य

प्राणियों को कष्ट हुआ है, वह समाप्त हो और वे सब मुझे क्षमा करें।"

ऐसे अर्थ वाले सूत्र को एक जैन की दैनिक धार्मिक क्रिया-विधियों में प्रस्थापित करने का आशय, उसके चित्त में कोमल भाव और सूक्ष्म चिंतन उत्पन्न हो, वह है। आधुनिक स्वार्थ केन्द्रित, भोगवादी जीवन शैली जिसने मनुष्यों के सामान्य जीवन की नींव में ही हिंसा और शोषण को बैठा दिया है, वैसी जीवन शैली के अंतर्गत ऐसी सूक्ष्म दृष्टि और सूक्ष्म भाव खिलना बहुत कठिन है।

भारतीय संस्कृति, निसर्ग से और सृष्टि के सनातन नीयमों से निकट रही हुई एक सुव्यवस्था है। इसमें ज्ञान, कला, शौर्य, शिक्षण, वाणिज्य, कुटुंब व्यवस्था, समाज और राज्य व्यवस्था - सभी आयाम स्व और पर के हित से जोड़े गए हैं।

जिस जीवन व्यवस्था के गठन में ही अहिंसा, सत्य, अचौर्य, अनासक्ति और अपरिग्रह जैसे ऊंचे भावार्थ आशय, प्रजा और जन-मानस में लाने, उपस्थित हो, और प्रजा को सद्-गुणी

बनाने का आशय निहित हो, वह व्यवस्था ही अन्य व्यवस्थाओं की तुलना में पवित्र है और अध्यात्मिकता विकसित करने, एक पूर्वभूमिका- स्वरूप बुनियाद है।

* जयणा पालन जिसमें कई मात्रा में अधिक सूक्ष्मता से हो सके, जिसमें आध्यात्मिकता विकसित होने के निमित्त अधिक प्रमाण में निहित है - ऐसी संस्कृति की रक्षा और रक्षा के उपाय देश-वासीयों के समक्ष प्रस्तुत करना।

पिछले ५०० वर्ष का इतिहास, घटनाओं के कालक्रम की श्रंखला में देखा जाता है। परंतु इस कालखंड को, भारतीय जीवन व्यवस्था पहुंचाए गए आघात की जिज्ञासा से जानने का प्रयास करें, तो आक्रमणकारी तत्त्वों का स्वरूप स्पष्ट दिखता है। संक्षिप्त में, यह तत्त्व आज तीन स्तंभ पर खड़े हैं:

* मेकोले शिक्षण → जिसने भारतीय शिक्षण परंपरा और मौलिक भारतीय चिंतन धारा को तोड़ा
* औद्योगिक क्रान्ति → जिसने स्थानीय, जातिगत, उत्पादन निर्माण व्यवस्था और अर्थ व्यवस्था को तोड़ा

* आधुनिक विज्ञान → जिसने शास्त्रोक्त, अहिंसक
विज्ञान और तत्व दृष्टि को तोड़ा

इस वास्तविकता के विकल्पस्वरूप, इस दीक्षा महोत्सव के स्वरूप, व्यवस्था और प्रस्तुति द्वारा, संस्कृति के छोटे छोटे अंशो को पुनर्जीवित करते हमारे जीवन में लाने का लक्ष्य है।

- गुरुकुल पद्धति में, मातृभाषा और संस्कृत में मूल शिक्षण प्राप्त करना । शास्त्र विज्ञान पढ़ना।
- आधुनिक, विवेक शून्य, हिंसा और शोषण आधारित उपभोक्तावाद (MODERN, EXPLOITATIVE CONSUMERISM) से भारतीय, परंपरागत कारिगरी द्वारा उत्पादित वस्तु आधारित उपभोक्तावाद (TRADITIONAL, ECOLOGICAL, THOUGHTFUL CULTURE OF CONSUMPTION) को स्वीकार कर, भारतीय वस्तुओं को "DECORATIVE", "HANDICRAFTS", "ETHNIC", "INDIGENOUS" जैसे अति विशेष, जीवन के एक कोने में पड़े दर्जो से निकाल कर, जीवन में सर्व व्यापि, सामान्य उपयोग में लेने का दर्जा दे। दृष्टिकोण इस एक, सरल बदलाव से प्रत्येक भारतीय, इस संस्कृति के पुनर्जागरण का भाग बन सकता है।

इस विशाल आशय को दीक्षा महोत्सव में एक विषय के माध्यम से प्रस्तुत करने की भावना:

(THROUGH A THEME)

"धर्म क्षेत्रों की पवित्रता"

औद्योगिक क्रान्ति और आधुनिक अर्थ तंत्र व यंत्रवाद से उत्पादित वस्तु-सामग्री की लहरे पूरे जीवन में व्याप्त है। शुद्धी के स्तर पर हीन और हलकी गुणवत्ता की वस्तुओं, प्रथाओं का प्रवेश धर्म स्थलों में बड़ी मात्रा में आना शुरु हो गया। तीर्थ स्थानो की पवित्र उर्जाओं में इनके द्वारा सूक्ष्म और स्थूल प्रदूषण इतनी मात्रा में बढ़ रहा है, कि उनका (धर्म क्षेत्रों का) मनुष्य के आराध्य तत्व के समीप आकर अंतर्मुख होने के मूल उद्देश्य ही नष्ट होने का भय खड़ा हो गया है। ELECTRICITY के भड़के, LOUD SPEAKER पर चलते DISCO BEAT वाले भक्ति संगीत माने जाने वाले गाने, बढ़ती हुई बाज़ारे और SHOPPING, भक्तों की अनुचित वेश-भुषा, बड़ी FLOOD LIGHTS, बढ़ती हुई "खाउ गलियाँ", आधुनिक वाहन उपयोग और सतत् HORN से SMOKE AND SOUND POLLUTION,

Scanned with CamScanner

पूजा सामग्री में ली जाने वाली हीन, प्रदूषण करने वाली वस्तुऐं, मंदिरों के प्राचीन स्थापथ्य को ध्यानपूर्वक RESTORE करने की जगह, उसे येन-केन प्रकार से तोड़ कर, नष्ट हुए भागों में CEMENT से भरपाई किए कुरूप आकार .... और इन सब विकृतियों बल देने वाली धर्म स्थानो को "DEVELOP" करने की मानसिकता ... यह सब चित्त की शांति और सौम्यता करने की जगह इन्द्रियों की इच्छाओं को अधिक निरंकुश बनाकर मानव चित्त को और भी उत्तेजित बनाते हैं।

जीवन की पीड़ाओं से व्यथित व्यक्ति जो शांति की खोज में धर्म क्षेत्रों में आता है, उसे अपने चित्त में पड़े सौम्य, शांत रस के दर्शन न होते, इन्द्रियों की उत्तेजना के प्रकाश में असंतोष और अनेक इच्छित फलों पर ही ध्यान केंद्रित रहता है।

धर्म क्षेत्रों की पवित्रता को पुनः स्थापित करने से जन-मानस में बड़े स्तर पर बदलाव आ सकता है। सामान्य दृष्टि भेद से अभी-भी यह बड़ा परिवर्तन लाया जा सकता है।

Scanned with CamScanner

❀ इस विषय को (THEME को) प्रस्तुत करने, उसे पाँच अंग में विभाजित करने की संकल्पना :

"धर्म क्षेत्रों की पवित्रता का पुनः स्थापन"
और उसके ५ (पाँच) उपाय :

१. बिजली (ELECTRICITY) का उपयोग पूरी तरह से बंद करना, या कम से कम रखना।

२. वेश-भूषा परिवर्तन - धर्म क्षेत्र में आते यात्री संपूर्ण भारतीय, उचित और शीलवान वेश-भूषा धारण करे। (संपूर्ण जीवन में स्वीकारे वही आदर्णीय है, परंतु कम से कम धर्म क्षेत्र में इसके प्रति खास सजाग रहे)

३. आधुनिक वाहनों को धर्म क्षेत्रों में न लाए। वाहनों का अनियंत्रित प्रकार ~~के~~ से चलना और बढ़ना पूरे वातावरण की उर्जा बदल देता है।

४. प्राचीन स्थापत्य को शास्त्रोक्त पद्धति से संभालना और नवीकरण करना। नया कोई भी भवन-

निरमाण शास्त्रोक्त पद्धति से, नैसर्गिक पदार्थों से करना।

4. (↓ OPTIONAL. THESE CAN BE CHANGED. BELOW ARE SUGGESTIONS BY LAKSHMIBEN & MEGHNABEN)

LAKSHMIBEN'S SUGGESTION -

इस पंच महाभूत से बनी, अनंत जीवों भरी सृष्टि, जिसे आज की मानसिकता में "NATURAL RESOURCES" मानते हैं (मनुष्यों के उपभोग के लिए नैसर्गिक सामग्री), उसके प्रति दृष्टि परिवर्तन ला कर चित्त में इस सृष्टि को एक पूर्ण चेतन्वंत वास्तविकता जान कर, नैसर्गिक, धर्म के नीयम अनुसार हर व्यक्ति अपने जीवन का पुनः स्मरण करे।

MEGHNABEN'S SUGGESTION -

दैनिक जीवन में अनेक प्रकार के उपयोग होते CHEMICALS पर व्यक्तियों का ध्यान खींचना। आज के पश्चात्य संशोधन अनुसार भी "MODERN HUMAN INTERIOR ENVIRONMENTS ARE THE MOST TOXIC & SPACES ON EARTH TODAY."

"धर्म क्षेत्रों की पवित्रता का पुनः स्थापन : उसके पाँच उपाय" - इस विषय को चुनने के कारण

१. बिजली (ELECTRICITY)

हेतु (मूल स्वरूप)	स्वरूप (व्यक्त)	फल	उपाय
बिजली की उत्पत्ति में लाखो लोगों और असंख्य जीवो के प्रति अन्याय और क्रूरता रही है। लाखों लोग अपने पैतृक गाँव और जमीन से निकाले गए है और जंगलो नष्ट किए गए हैं DAM बनाने। यह बिजली उद्योग और बड़े शहरो की शान-शौकत बढ़ाने में ही बड़ी मात्रा में उपयोग होती है। उसके ELECTRICAL, TOXIC यंत्रो मे MALFUNCTION और SHORT CIRCUIT से हजारो मजदूरो के मृत्यु होती है।	बिजली से चलते यंत्रो द्वारा मनुष्य जीवन की अनेक कड़ियों में कृत्रिमता, आलस्य, मिथ्या काल्पनिकता, क्रूरता और जड़ता, और उत्कृष्ट हिंसा प्रवेश कर गई है। जीवन गंदी ऊर्जाओं से भर दिया है।	"TECHNOLOGY ने दुनिया को छोटी बना दी है, सब को पास लाई है" के भ्रम में डाल कर वास्तविकता में मनुष्यों को अकेलेपन, DEPRESSION, आलस्य, ~~अपन~~ अपनी वास्तविकता से अज्ञान, प्रकृति के धर्मो का अनुसरण करते भी उत्कृष्ट जीवन निर्माण का ज्ञान नष्ट कर दिया है।	जीवन में हो सके वहाँ चिन्तन, पर-हित चिन्ता, सहनशीलता और प्रसन्नता से हो सके वहाँ बिजली का उपयोग कम या न करे। धर्म क्षेत्रो में दिन-चरिया के नियम अनुसार विवेकपूर्वक व्यवहार रखे, बिजली का उपयोग अप्राकृतिक तरह से हो रहा है (LOUDSPEAKER) etc. वहाँ न रहे, पंखे, LIGHT के बिना रहने का प्रयास करे, आदि

२. वेश-भूषा

हेतु (मूल)	स्वरुप	फल	उपाय
आधुनिक वेश-भूषा शरीर की स्वस्थता, औचित्य, त्वचा के लिए सबसे हितकारी, शरीर के अंग सहज रह सके - ऐसे प्रमाणो पर न हो कर TRENDS, FASHION INDUSTRY का संतुलन बनाए रखने और लोगों को सतत अच्छे दिखने की चिन्ता में रखने के आधारों पर चलती है।	प्रजा वेश-भूषा के संस्कार और सभ्यता भूलती चल रही है। अपने वेश का अन्यो पर क्या प्रभाव पड़ता है वह व्यक्ति के मन में नही होता। कौनसी जगह प्रसंग अनुसार क्या पहनना उसमें ध्यान नही।	सामान्य प्रजा वृष्ट सौंदर्य और सुघड़ता जैसी कम हो गई है। अपने से बुजुर्ग, आदर-पात्र व्यक्तियों, दरिद्र या दुर्भाग्य ग्रसित व्यक्तियों, पवित्र आराध्य तत्त्व - भगवान - के समक्ष मेरी आकृति का प्रभाव - ऐसी विचारणा नही रही।	भारतीय वेश-भूषा के पीछे रही मूल विचारणा और सिद्धांतो से पुन: परीचित होना - MATERIALS से, PRINCIPLES से, औचित्य से। पहनना फिर शुरु करना)

अनुचितता, वस्त्रों के SYNTHETIC होने के प्रभाव का कोई बोध नही रहता।

३. आधुनिक वाहन

हेतु	स्वरुप	फल	उपाय
AUTOMOBILE INDUSTRY और इससे जुड़े अनेक SUBSEQUENT INDUSTRY SECTORS (eg. ROAD CONSTRUCTION, SIGNALS AND ELECTRICALS, SPARE PARTS, SOUND SYSTEMS AND MANY MORE), प्रत्येक देश की सरकार ONE OF THE HIGHEST JOB CREATING INDUSTRIES मानती है। सरकार के लिए यह एक HIGH PRIORITY SECTOR है। EMPLOYMENT GENERATION का माध्यम मानती हैं। वेश-भूषा के समान, व्यक्ति अपने वाहन को भी अपनी "छाप" का भाग मानता है।	गाड़ी, खास कर के अच्छी गाड़ी होना जीवन में सफलता का एक चिह्न बन गया है। गाड़ी का अर्थ सुविधा और सुविधा का अर्थ अच्छा जीवन बन गया है। हरेक प्रजाजन के पास वाहन हो और देश ROAD NETWORK से पूरी तरह जुड़ जाए वह भी राष्ट्र के सफलता का चिह्न बन गया है।	सड़कों के CONSTRUCTION का MILEAGE बढाना और सब देश वासी वाहन ले सके उसे प्रगति मानना - इस मान्यता ने अभी BLIND FAITH तुल्य जगह कर ली है। इसके दुष्परिणाम क्या हो सकते है या किसके भोग से यह संभव है उसका को विचार, चिन्ता या संशोधन नहीं दिखता।	वाहन उपयोग न करना पड़े ऐसे जीवन के उपाय और विचार करने। धर्म क्षेत्र और टिके हुए गाँव, NATURAL AREAS में कम से कम आधुनिक वाहन का उपयोग न हो। व्यक्तिगत जीवन में कार्यकुशलता बढ़ानी, पेट्रोल के उपयोग और बिगाड़ की जागृतता रखनी, चलने की आदत डालनी, छोटे-बड़े जीवों की चिंता करनी।

४. स्थापत्य (मुद्दा न. ५ FINAL होने पर जोड़ा जाएगा)

हेतु	स्वरुप	फल	उपाय
MODERN CONSTRUCTION INDUSTRY, भारतीय स्थापत्य परंपराओं बिलकुल अलग हेतु पर खड़ी है। इसमे मनुष्यों के स्वास्थ्य, सहजता, नैसर्गिक नियमों को बहोत ध्यान न देते, URBAN SPACE LIMITATIONS, COST EFFICIENCY, CHEAP RAW MATERIALS, और पिछले ३ मुद्दों के समान इस INDUSTRY को टिकाने पर ज्यदा ध्यान है।	HUMAN SETTLEMENT ज्यादा विचित्र और अपने वातावरण के स्वरुप से बिलकुल विपरीत प्रकार से बनाए जा रहे है, जिससे आगे जा कर मनुष्य और प्रकृति दोनो को भारी पड़ेगा। धर्म क्षेत्र, जो पहले सुंदर, शांत और रमणीय थे, अब विचित्र लगते है।	प्राकृतिक विनाश धीरे धीरे (और अब से तेज़ी से) बढ़ता जाएगा। लोगों अब घर और अपने रहने के विस्तार को प्रतिकुल अनुभव करने लगे है, घुटन अनुभव करने लगे है और बेचैनी से सतत कही न कही जाने की योजना बनाते रहते है।	स्थापत्य को शास्त्र प्रमाणो से पुन: जोड़े, कही और नही तो काम से काम धर्म क्षेत्रो में।

इन विचारों और आशयों को दीक्षा महोत्सव के आयोजन और व्यवस्था से जोड़ने कुछ विचार :

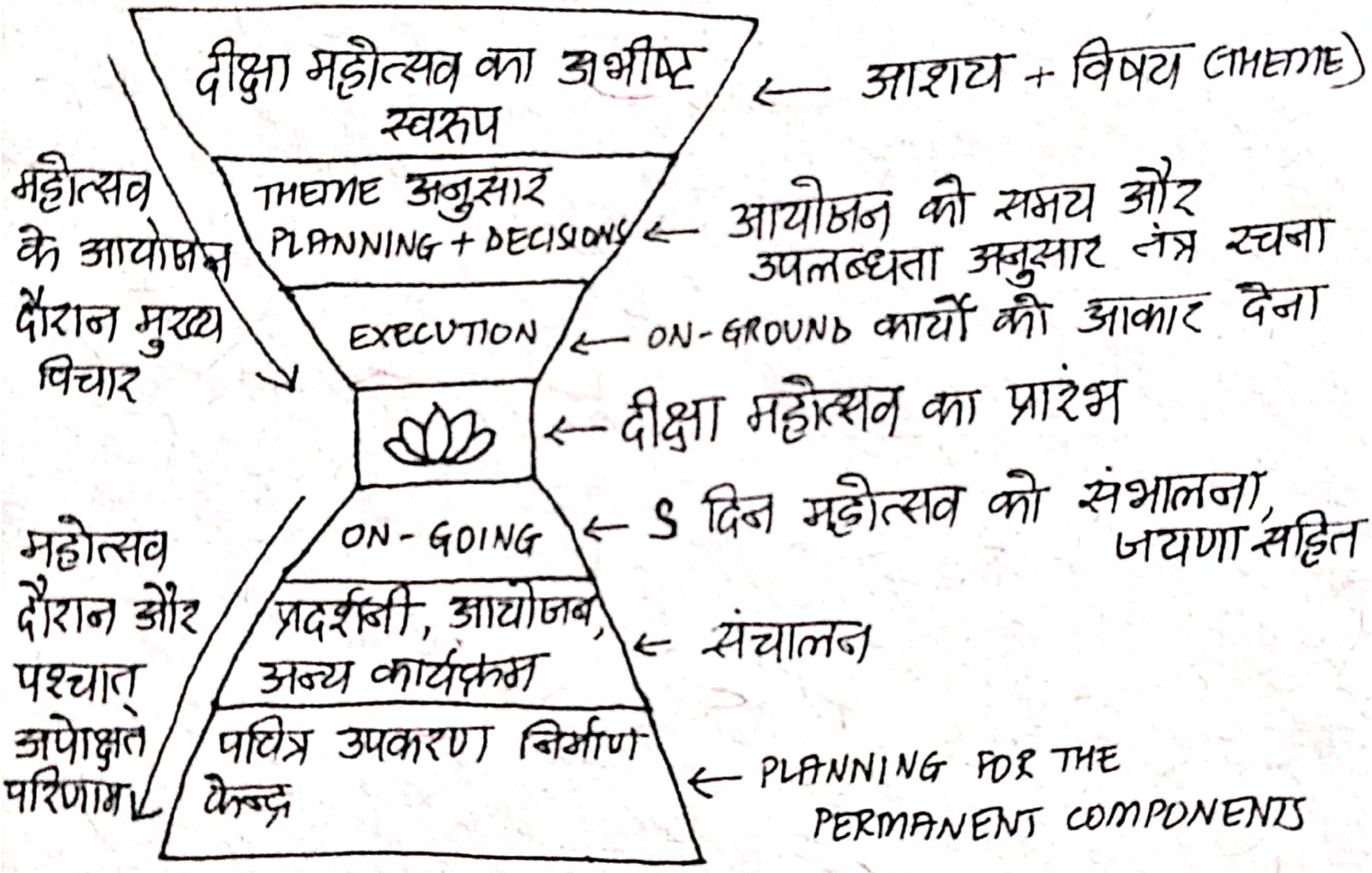

"धर्म क्षेत्र की पवित्रता का पुनः स्थापन" विषय (THEME) प्रासंगिक तंत्र और रूपरेखा देने की प्रक्रिया के कुछ विचार:

(BRAINSTORMING - JUST SOME IDEAS,
CAN BE DISCUSSED AND DECIDED UPON
IN THE NEXT MEETING)

हेतु
(हमारी संस्कृति में इसका प्रवेश कैसे हुआ? प्रवेश होते किस सांस्कृति प्रथा की जगह उसने ली?)

स्वरूप
(भारतीयों के जीवन में यह आते जीवन कैसा बन गया है?)

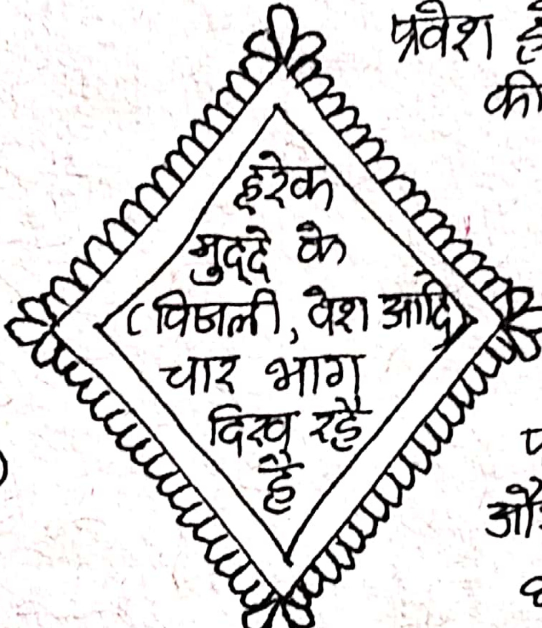

फल
(इसके वर्तमान परिणाम और निकट और दूर के भविष्य में घटते परिणाम)

उपाय / विकल्प
(भारतीय प्रथाओं कलाओं की प्रस्तुती, जानकारी)

THEME और सिद्धांत को जोड़ने ऐसे विचार किया जा सकता है:

हेतु दर्शाने के कला माध्यम:

* हेतु में एक कहानी, एक इतिहास है।
* यह PUPPET SHOW, भवाई, नाटक, (e.g. MADHUBANI ART) PICTURE STORY से हो सकता है।

* ज्यादा गंभीर स्वरूप में कोई जानकार विद्वान से २-३ दिन की व्याख्यान माला से हो सकता है।

❀ स्वरूप और फल :

* यह विचार धारा प्रदीप्त करने और प्रबोधन का विषय है।
* महोत्सव और धर्मशालाओं में योग्य स्थानो पर अनेक कपड़े से बने, हाथ से लिखे BANNER (छोटे-बड़े) लगा सकते हैं जिनपर धर्म और संस्कृति से जुड़े मार्मिक सद्विचार हों।
* सुरम्य सजावट वाले छोटी छोटी बैठने की ४-५ जगह बना सकते है जहाँ लोग बैठ कर बातें कर सकें। इन जगहों पर संस्कृति से जुड़ी पुस्तकें और लेख रखे जा सकतें हैं।

❀ उपाय / विकल्प :

* EXHIBITION / प्रदर्शनी
* SPACES WHERE INDIVIDUAL EXHIBITS CAN BE INSTALLED.
* संपूर्ण स्थल (VENUE) की सजावट
* अतिथियों को आते या जाते समय लेख, पुस्तक या उपयोगी वस्तुओं की भेंट देना

(MEETING दौरान उपरी सभी मुद्दों विशे संवाद हो सकता है) - THESE ARE JUST SOME STARTING IDEAS

Scanned with CamScanner

✿ अब तक आशय को स्पष्ट करते, आशय के आधार पर दीक्षा महोत्सव की कल्पना की है। इस लेख में यहाँ से, अब महोत्सव के आधार पर आशय के व्यक्त स्वरूप को गढ़ने के विचार साझा करते है.......

- प्रदर्शनी कई प्रकार के होते है। (EXHIBITIONS ARE OF MANY KINDS, DESIGNED BASED ON VARIOUS INTENTS) हरेक का आशय अलग होता है। कई उत्पादन बेचने के आशय से हैं, तो कई कलाओं के प्रदर्शन के लिए, जिससे वह वस्तु के कारिगर या कलाकार को "SUPPORT" मिले। यहाँ "यह मेरे देश-वासि हैं.... सज्जन हैं.... सुंदर कला के जानकार और रखवाले हैं.... मुझें उनकी मदद करनी चाहिये"....आने वाले लोगों में ऐसा उदार भाव होता है, जिससे वे उत्पादन खरीदते हैं या उन्हें धन अर्जित करते हैं। यहाँ "मैं" और "वह" व्यक्ति को अलग भासित होते हैं।

- दीक्षा महोत्सव दौरान जो प्रदर्शनी रखनी है.... उसके माध्यम से हमें इस सामान्य उदार भाव को एक कदम आगे ले जाते, ऐसा अनुभव प्रदान करना है कि "अरे! हम पहले ऐसे रहा करते थे! मेरे परिवार और अलग जाति

के परिवार और लोगों के बीच, हम सब हमारी कुल परंपराओं में रहते हुए भी, इन सुंदर उत्पादन और उपयोगी, शुद्ध वस्तुओं, और उनकी बनावट के ज्ञान और कथाओं के आदान-प्रदान से इतने परस्पर निर्भर थे! मैं चाहूँ तो ज़रा सी दृष्टि भेद कर के, भाव परिवर्तन करके कितनी सुंदरता को मेरे जीवन मे ला सकता हूँ।" - हमारा आशय यह भाव प्रदीप्त करने का है।

(WE WOULD LIKE PEOPLE TO TAKE A NEW PERSPECTIVE OR NEW THOUGHTS BACK WITH THEM. SO THERE IS A "TAKE BACK HOME" ELEMENT IN OUR INTENTION FOR THE PEOPLE ATTENDING.)

हृदय स्पर्शी और विचारकता उत्पन्न करने की दृष्टि से देखें तो, प्रदर्शनी के घटक (COMPONENTS) इस प्रकार से देखे जा सकते हैं -

* महोत्सव स्वयम और उसके प्रसंग।
* प्रदर्शनियाँ - (THE EXHIBITION AREA AS WELL AS INDIVIDUAL EXHIBITS PLACED AT DIFFERENT POINTS)

प्रदर्शनियाँ सिर्फ दिखें नहीं, परंतु उनमें INTERRACTIVE और SOCIAL ELEMENTS को व्यवस्थित योजना और विचार

से उनका स्वरूप निश्चित करना।

* महोत्सव के प्रसंगो के स्थल, लोगों के रहने के स्थल, धर्मशाला से प्रसंग तक चल कर आने-जाने के मार्ग – संपूर्ण जगह को ही POTENTIAL EXHIBIT AREA मान कर INDIVIDUAL EXHIBITS या AESTHETIC ELEMENTS PLAN कर सकते हैं।

✓ IMP. इस के लिए एक व्यवस्थित SPACE AUDIT और MEASUREMENTS OF AVAILABLE PLACES, SPACES, CORNERS, WALL SPACE, CEILING SPACE की टिप्पणी सबसे पहले, प्राथमिकता दे कर तैयार करनी चाहिये जिससे हम क्या कर सकते हैं और नही कर सकते उसका निर्णय ले सके।

* "TAKE BACK HOME ELEMENT" मे प्रसंग और प्रदर्शनी के बाद, वस्तु स्वरूप में भी देख लेते हैं। Example – WELCOME KIT WITH TRADITIONAL, ECO FRIENDLY UTILITY ITEMS – BATH POWDER, KHADI TOWEL, DANT MANJAN, ETC. OR RETURN GIFT WITH SIMILAR ITEMS AND A SET OF BOOKS AND ARTICLES.

* प्रसंग और दर्शन के समय के बहार, लोग अपने कमरों में भी RELAX करते हैं। इस लिए धर्मशाला की LOBBY, OPEN SPACES, ENTRANCE के बहार की जगह को भी 'USABLE SPACE' मान सकते हैं।

महोत्सव विषय, विभाग १ प्रति विचार
" बिजली का उपयोग बंद या कम करना "

LIVE DISPLAY

१. बिजली का उपयोग मोबाईल, T.V., कम्प्यूटर और ठंडी हवा लाने सिवाय मुख्य रूप से रसोई में होता है। T.V. एक आदत है, मोबाइल विवेक रखने से कम कर सकते है, कम्प्यूटर कार्य के लिए उपयोग होता है, गरमी, व्यक्ति का संकल्प बदलाते सही जा सकती है.... परंतु रसोई घर .... बिजली से चलते KITCHEN EQUIPMENT सब को आवश्यकता लगती है। छोटे बच्चों को भी रसोई में अपनी माता के साथ साथ रहने से, KITCHEN EQUIPMENT के उपयोग द्वारा जीवन की शरुआत से ही बिजली आवश्यक ही लगेगी।

❀ शायद इस प्रसंग में रसोई घर जहा सब की रसोई होगी, उसी को ध्यान दे कर एक EXHIBIT मान कर संपूर्णतया प्राचीन रसोई घर, NON ELECTRIC बना कर, सुंदर DECOR ~~सह~~ सहित, LIVE MUSEUM जैसा बना सकते हैं। उसमें हाथ घंटी, सील-बट्टा आदि ही उपयोग हो। इस जगह का PLANNING ~~ऐ~~ ऐसा हो सकता है कि बहार के लोग प्रवेश न करे परंतु एक तरफ ~~से~~ ~~उसकी~~ पूरी खुल्ला हो जहाँ से पूरा रसोई

घर स्पष्ट दिखे। जहाँ से यह रसोई घर का दृश्य दिखे वहाँ बैठने की जगह बना सकते है। अगर लोग शांती से 15-20 मिनिट बैठ कर, देखना चाहते है, आपस में बात-चीत करना चाहते है, तो ज्यादा अच्छी तरह से स्मृति में रहने की संभावना है।

- हरेक धरमशाला में हाथ-घंटी आदि DISPLAY, GROUND FLOOR पर बनाया जा सकता है सुंदर सजावट सहित।

- बिजली हमारे देश में कैसे आई, कैसे उत्पन्न होती है, उसके पहले जीवन कैसा था - यह एक पूरी कहानी है। PUPPET SHOW के माध्यम से बताई जा सकती है। इसके आयोजन के लिए समय कम हो तो, भवाई के माध्यम से कही जा सकती है। भवाई के कलाकार दिन में २-३ बार FIXED जगह पर कार्यक्रम कर सकते है।

STORY THROUGH ENTERTAINMENT

- प्रसंग के दौरान LIGHT के विकल्प स्वरुप दीये तो होंगे ही। परंतु थोड़ा और संशोधन कर, रात को प्रकाश के जितने अलग अलग विकल्प है उसे ढूंढ कर उपयोग में और DISPLAY में ले सकते है। EXAMPLE, VARIOUS TYPES OF मशाल THAT LIGHT UP BIGGER SPACES AND ROADS.

PART OF EXHIBITION

❀ महोत्सव विषय, विभाग २ प्रति विचार

"सांस्कृतिक वेश-भूषा"

अपना वेश और छवि व्यक्तियों के लिए एक बहुत ही PERSONAL विशय है। और एक जिसमें उसकी व्यक्तिगत रुचि-अरुचि, "मैं कैसा लगूंगा?", "सब मेरे बारे में क्या सोचेंगे?", "मुझे SMART लगना है", "MY DRESSING IS AN EXPRESSION OF WHO I AM".... ऐसे अनेक PSYCHOLOGICAL FACTORS जुड़े है।

- आम तौर पर व्यक्ति अपनी वेश-भूषा अपनी रुचि बदलाने से ही बदलता है। रुचि बदलने विशय का सामान्य परिचय ज़रूरी है।

EXHIBITION

ऐसा लगता है कि ईस विशय में भारतीय TEXTILES और TEXTILE CULTURE की स्पष्ट और सूक्ष्म जानकारी और उसके पीछे रहा विज्ञान व्यक्ति को प्रभावित कर सकता है। वहाँ एक खूब सुंदर और खूब DETAILED TEXTILE AND EMBROIDERY DISPLAY की OPPORTUNITY है - जिसके रंग, सुंदरता और कारिगर ही उसका COMMUNICATION माध्यम बन सकता है।

Scanned with CamScanner

* एक 'TEXTILE TECHNICIAN' या RESEARCHER की मदद से इस EXHIBITION AREA के COMPONENTS निश्चित कर सकते है।

PART OF EXHIBITION

* इस वेश-भूषा के विशय मे "उपदेशक APPROACH" न रखते "वैज्ञानिक APPROACH" रख सकते है।

EXAMPLE, शुद्ध FABRICS - COTTON, KHADI, WOOL, SILK के STATIC ENERGY FIELDS ऐसे है शरीर के आसपास आते, अदृश्य अशुद्ध रज कण, शरीर से दूर फेंकता है। इस विशय को "उपदेश पद्धति" से प्रस्तुत करने से लोगों को शायद कम रस पड़े। अपने बड़े-बुजुर्गों से "ऐसे कपड़े मत पहनो", "ऐसे ही कपड़े पहनने चाहिये", "हमारे दिन में ऐसे कपड़े पहना करते थे" - ऐसी बातें बार बार सुन कर इस विशय में लोग कम RESPONSIVE होते हैं।

जो विशय बाहर से COMMON और COMMONLY UNDERSTOOD ~~लगते~~ लगते है, कई बार देखा है कि, लोगों को उनकी विशेषता का खास परिचय नही है।

TEXTILES एक ऐसा ही विशय है। इसके गंभीर रहस्य HARDLY किसी को पता है।

Scanned with CamScanner

DEMO + ENTERTAINMENT

❀ जिन लोगों को विविध प्रकार की पघड़ी बांधना आता है .... वैसे २-३ व्यक्तियों को EXHIBITION के एक कोने मे जगह बना कर LIVE DEMONSTRATION करवा सकते हैं। VISITORS अलग अलग प्रकार की पघड़ी बंधवा कर अनुभव कर सकते है।

❀ जहा TEXTILES होतीं है, उस जगहों का वातावरण इतना रंगीन और रोमान्चक होता है, खास कर के स्त्रियों के लिए .... वहाँ आस-पास गाँव की छोटी संगीतकारों की मंडली को बैठाया जा सकता है। सुगंधी पदार्थ रखे जा सकते है। ऐसे सात्विक आनंद के अनुभव लोगो की स्मृति में सालों तक रहते हैं।

❀ वेश-भूषा के विशय को लोगो के मन में विचार-पात्र बनाना हो तों उन्हे यह ज्ञान और आनंद से जोड़ना होगा ऐसा लग रहा है। उन्हे ऐसी अनुभूति करवानी है कि "अरे! ऐसा मैंने कभी सोचा ही नही था इस चीज़ के लिए।"

LIVE KNOWLEDGE SHARING

❀ उस में TEXTILE RESEARCHER की सतत् उपस्थिति से SYNTHETIC और NATURAL FABRICS के अंतर को लोगों से बात कर के बताई जा सकती हैं।

❁ महोत्सव विषय, विभाग ३ प्रति विचार

"आधुनिक वाहनो का उपयोग वर्जित रखना"

आधुनिक यंत्रवाद और आधुनिक वाहनो के उपयोग का विकल्प हम शास्त्र सम्मत, पशु और मानव की ऊर्जा से चलते यंत्रो व वाहनो के उपयोग का सुझाव प्रस्तुत कर रहे है। (MECHANISMS, CONTRAPTIONS AND VEHICLES / CARTS POWERED BY ONLY HUMAN AND ANIMAL ENERGY).

ऐसे सोचें तो, मनुष्यों और पशु से खींचा जाता वाहन है... उसके साथ साथ इस पूरे मुद्दे मे पशु, पशु-पालन और पशु प्रति कोमल भाव और व्यवहार भी केन्द्र बिंदु में आता है। इसके बिना पशु के साथ संवेदनहीन व्यवहार जो आज काल दिखता है - जैसे शादी, त्यौहार, वरघोड़े में... जहा पशु का उपयोग कर लेते हैं परंतु पशु स्वस्थ है, घायल है, भूखा प्यासा है, थका है.... इस में कोई रुचि नही.... ऐसी परिस्थिति और बड़े स्तर पर खड़ी होगी। संस्कृति का यह स्थंभ

खड़ा करने में पशु हमारे साथी, सहभागी, आश्रित और मित्र हैं। पशु उर्जा से चलते वाहन की बात में, एक प्राणी को हमारे कार्य में लाने से उस प्राणी प्रति उचित व्यवहार की जगह बनानी बनती है।

प्राणी जगत से मैत्री भाव रख कर मनुष्यों को कही सुख अनुभव होता है। तो वाहन के मुद्दे के साथ साथ मनुष्य और प्राणी जगत के परस्पर व्यवहार और परस्पर निर्भरता का लाखों बर्षों से स्थापित स्वरुप.... विशेष रुप से भारत में इस व्यवहार का जगत में सबसे अहिंसक स्वरुप.... की जानकारी और अनुभव लोगों को दिया जाए, तो वह भी सब की स्मृति में रह जाएगा।

❀ जैसे BUS SERVICE होती है, उस ही तरह बैल गाड़ी, ऊँट गाड़ी, घोड़ा गाड़ी की पर्याप्त व्यवस्था हो सके, और साथ साथ इन पशुओं के TEMPORARY SHED, महोत्सव के आस-पास की खुली जगह के कोई कोने में बनाए जाएँ जहाँ लोगों को वह दिख सके, उनके नाद, उनकी सुगंध अनुभव कर सके, पशुपालकों के साथ कुछ

संवाद बन सके... तो लोगों के मानस पर प्रभाव पड़ेगा, बच्चों पर प्रभाव पड़ेगा। पशु आज कल बहुत दिखते नहीं हैं। जैसे कतलखानों में दूर कहीं, बड़ी दीवारों के पीछे उन्हें घुसा देते हैं, वैसा न कर के पशुओं को इस प्रसंग में हमारे बीच रखकर कोई दिखे वैसे कोने उनके पालन की TEMPORARY व्यवस्था हो... तो प्रसंगों की बीच के FREE TIME में माता-पिता अपने बच्चों को इन उपकारी प्राणीओं के पास ले जा सकते हैं।

रहस्य की बात है... कि पशु से चलते वाहनों को स्वीकार करने के कारणों में से एक है पशु प्रति सुकोमल भाव। इस आधुनिक काल में, जहां पशु सज्जन परिवारों की मालिकी में न हो तो अनाथ और कोई न कोई INDUSTRY / उद्योग से शोषित हो जाते हैं। पशुओं के प्रति कोमल भाव और उनकी रक्षा का भाव उत्पन्न होते भी, उनसे चलते वाहन के उपयोग का मन होता है।

पशुपालन और उसकी विशेष सांस्कृति जानकारी रखते बुजुर्ग व्यक्ति को महोत्सव के सभी दिन उपस्थित रहने का आमंत्रण दे सकते हैं, जो लोगों से यह बातें कर सके।

Scanned with CamScanner

महोत्सव विषय, विभाग ४ प्रति विचार

" सांस्कृतिक स्थापत्य "

~~वि~~ भारतीय स्थापत्य की विशेषता केवल सुंदर आकार, आकृति और कारिगरी में नही, परंतु मनुष्यों को उनमें आकार में धारण किए हुए आकाश तत्त्व का अनुभव है, वह है। उनमें एक प्रकार का खुलापन और विश्रांति ~~का~~ का अनुभव होता है।

- शक्य हो (PERMISSION और समय व BUDGET अनुसार) तो प्रदर्शनी स्थल (EXHIBITION AREA) और सभी महत्वपूर्ण स्थल जो NODE POINTS है (ENTRANCE, EXIT, INFORMATION AREA, ETC.) में TEMPORARY भारतीय स्थापत्य के स्थल अनुसार योग्य आकार के MUD CONSTRUCTION कर सकते हैं. BAMBOO पर BANNER की जगह। EXAMPLE, ENTRANCE में MAJESTIC ARCH वाला STRUCTURE बनाया जा सकता है, प्रदर्शनी ~~क~~ को गाँव की गली या चौराहे जैसा दिखे वैसा बनाया जा सकता है, योग्य जगह पर GAZEBO, जहाँ DOME और नीचे 20-25 लोग बैठ कर बात कर सकते है, जहाँ भवाई या गोष्टि रखी जा सकती है।

- प्रदर्शनी स्थल पर (AT THE EXHIBITION AREA), भारतीय स्थापत्य को विस्तार से समझाया जा सकता है - एक एक अंग - दरवाज़े, खिड़की, चौक, DOME, खंभे, COURTYARD, प्राचीन काल में घर और उपाश्रय कैसे हुआ करते थे.... यह सब DISPLAY के माध्यम से पता चले।

- इस कार्य के लिए स्थानीय कारिगर और HERITAGE ARCHITECT या INDIGENOUS ARCHITECTURE की रक्षा करती संस्था की मदद ली जा सकती है।

- प्रदर्शनी में MODERN CONSTRUCTION INDUSTRY के स्वरूप को समझाया जा सकता है और पृथ्वी पर इसकी असरें बताई जा सकती हैं।

- योग्य जगहों पर WALL PAINTING भी ध्यान में रख सकते है इन CREATED MUD STRUCTURES पर. EXAMPLE "मधुबनी PAINTING, गेरू, कच्छ WORK.

❀ WORK FLOW और MEETING में तात्कालिक निर्णय लेने की बातें ....

❀ MEETING ARRANGE करना (FOR DECISIONS) → MEETING के पहले सब को LIST OF AVAILABLE PLACES, SPACES, CORNERS, MEASUREMENT सहित, SO THAT REAL PARAMETERS के आधार पर बात और व्यवस्था हो सके। → स्थापत्य, STRUCTURES, EXHIBITION AREA CONSTRUCTION CONCEPT पर निर्णय हो

↓

महोत्सव के चारों अंग (और संभव पाँचवा हो तो) का स्वरूप के ONE-BY-ONE निर्णय हो WITH CONCEPT CLARITY → कौनसे अंग के लिए कौनसे कलाकार, कारिगर, संस्था और संशोधकों का संपर्क करना है, उसका LIST → महोत्सव के के हरेक अंग के स्वरूप निश्चित होते, उनमें आवश्यक सामग्री का LIST बनाना (INVENTORY LIST)

→ समय और BUDGET LIMITATIONS की विचारणा करना → इस कार्य के लिए REQUIRED ADMINISTERATION REQUIREMENTS स्पष्ट करना

* ६-७ ऐसे विशय के जानकार व्यक्तियों को ढूंढ कर महोत्सव के सभी दिन दौरान वहाँ ~~[illegible]~~ उपस्थित रहने का आमंत्रण देना। EXAMPLE, TEXTILE RESEARCHER, HERITAGE ARCHITECT, पशुपालन की परंपरागत जानकारी हो वैसे व्यक्ति, ELECTRICITY GENERATION की ENGINEERING का ज्ञान हो और उसके परिणाम समझा सके। इन व्यक्तियों को संपूर्णतया केवल उपस्थित रहने और लोगो से बात करने, विशय समझाने वहाँ बुलाना, बाकी और कोई काम नही। यह व्यक्ति उनके रुचि के विशय अनुसार स्थल के DESIGNING और CONCEPTUALISING STAGE से साथ कार्य में जोड़े जा सकते हैं।

* इस पूरे कार्यक्रम मे एक बात याद रख कर DESIGN करें- कि यह LIFESTYLE CHANGES जो हम बताना चाहते है, वह केवल जानकारी प्राप्त कर के, व्यक्ति "SWITCH" कर दे, ऐसी प्रक्रिया बहुत कम लोगों में होती है। हरेक DESIGN में लोगों को ज्ञान प्रदान करते, सुंदर प्रदर्शन निर्माण करते, उनके लिए "अनुभव INTEGRATION FACTORS" भी सूक्ष्म विचार

और PLANNING से CONCEPTUALISE करें। व्यक्ति की हरेक विशय (ELECTRICITY etc.) के प्रबोधन / प्रभाव पड़े ऐसे स्थल पर व्यक्ति की सभी पाँच इन्द्रियाँ उसमें ~~[illegible]~~ ENGAGE हो ऐसा PLANNING आवश्यक है।

- इन सभी PLANS बाद - ज्ञान प्रदान करने के माध्यम और स्थल निश्चित करना आवश्यक है। पूरे स्थल को व्यवस्थित प्रकार से LABELLING करना, BANNERS (WITH PHILOSOPHY POINTS AND QUOTES, का LIST बनाना और चुनना।

- प्रदर्शनी (EXHIBITION AREA) में जो एक सुंदर "CONSULTATION AREA" (EXAMPLE, OUTSIDE SITTING AREA OR CONSTRUCTING A KUTCHH STYLE ~~[illegible]~~ TEMPORY MUD HOUSE) जहाँ जीवशैली बदलाना कहाँ और कैसी शुरू करें उसके संवाद हो सके। इस जगह पर सभी विकल्प स्वरूप वस्तुएं एक साथ रख सकते हैं - बरतन, आसन, खाद्य पदार्थ, STATIONARY ITEM, HOUSEHOLD ITEMS। यहाँ चर्चा के लिए एक जानकार व्यक्ति हो।